P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान भारत में समाजवादी समाज रचना के लिए जय प्रकाश नारायण का योगदान

सुधाकर लाल श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
दी0द0उ0गो0वि0वि0,
गोरखपुर, उ.प्र., भारत

सारांश

जय प्रकाश नारायण ने ही भारतीय स्वतंत्रय आन्दोलन के दौरान समाजवादी समाज रचना की प्रस्तावना और समाजवादी पक्ष की निर्मित की थी। उनके अनुसार सामाजिक न्याय निर्धन और निराश वर्ग को उठाकर ही किया जा सकता है। जय प्रकाश नारायण ने समाजवादी समाज रचना की प्रस्तावना में अपना जीवन करोड़ों अभावगस्त जनों की सेवा में अर्पित कर दिया। उनकी समाज रचना का केन्द्र बिन्दु सामान्य नागरिक बन गया। जय प्रकाश के जीवन चिन्तन पर गांधी जी का प्रभाव बनता गया उन्होंने समाजवाद को ही गांधी विचार समझने का आवाहन किया। स्वतंत्रता के बाद इस देश में समाज परिवर्तन का अभूतभूर्व अवसर उपस्थित हुआ। जय प्रकाश की नव समाज रचना की पृष्ठ भूमि में एक समग्र क्रांति की पुर्ननिर्मिति है।

मार्क्सवाद के अध्ययन ने जयप्रकाश को स्वातंत्र्य के वृहत क्षेत्र में प्रविष्ट कराया था जय प्रकाश ने अनुभव किया कि राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नही है और जयप्रकाश नारायण का विचार निरन्तर दृढ होता गया कि सम्पूर्ण और समग्र मानवीय स्वांतत्र्य के लिए राज्य मुक्त समाज की आवश्यकता है। पूंजीवाद से छुटकारा पाने के लिए जय प्रकाश ने समाजवाद का समर्थन किया था किन्तु समाजवाद में राज्य के ही पूंजीवादी या सम्पत्तिवादी बन जाने पर सत्ता और सम्पत्ति का अपवित्र गठबंधन को जय प्रकाश ने नहीं स्वीकारा। गांधी जी के विचारों के विरोधी होते हुए भी एवं पूर्णतः गांधीवादी थे और धीरे–धीरे गांधी के ओर खींचते चले गये और अन्त में उनकी पूरी विचारधारा से सराबोर हो गये। लेकिन गांधी जी के विचारों को आत्मसात करने के पहले भी गांधी और जे0पी0 की लोकनीति में अटूट आस्था थी। गांधी जी हमेशा लोकसत्ता को मजबूत बनाने के पक्षधर रहे। इसी कारण आजादी प्राप्त होने के बाद उन्होंने कांग्रेस को भंगकर लोक सेवक संघ बनाने की सलाह दी। अपने हत्या के एक दिन पूर्व 29 जनवरी, 1948 को गांधी जी ने कांग्रेस के संविधान में सुधार करने के लिए एक मसविदा तैयार किया था उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने देश को स्वतंत्रता कराकर बहुत बड़ा काम किया। किन्तु अभी बहुत काम करने है देश को राजनीति स्वतंत्रता मिली है किन्तु अभी जनता की और खासकर गांव की आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करनी है।

मुख्य शब्द : स्वाधीनता आन्दोलन, जय प्रकाश नारायण, समाजवादी समाज रचना।

प्रस्तावना

जय प्रकाश नारायण के अन्दर देश प्रेम, स्वतंत्रता समानता और क्रांति की भावना कूट–कूट कर भरी है। अध्ययन के लिए अमेरिका प्रवास में वह मार्क्सवादी हो गये, और जीवन के अन्तिम दिनों में मार्क्सवाद का रास्ता छोड़कर सर्वोदयी गांधीवादी हो गये थे, मार्क्सवादी से समाजवाद और समाजवाद से सर्वोदयी गांधीवादी तक की लम्बी विचारयात्रा में कई महत्वपूर्ण मोड़ आये और जय प्रकाश नारायण ने अपने विचार परिवर्तन का आधार भी स्पष्ट किया। कांग्रेस के अन्तर्गत विकसित हो रहे समाजवादी दल के संगठन में उनका निर्णायक योगदान था किन्तु वास्तविक रूप से भारत में विकसित हो रहे समाजवादी भावना के वे जनक रहे है, समाजवाद को भारतीय संदर्भ में देखने और उसे व्यावहारिक रूप में उतारने का जो स्तुत्य प्रयास श्री नारायण ने किया उसकी महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। राजनैतिक जीवन में प्रवेश काल से ही जयप्रकाश नारायण के मन में सामन्तशाही और पूँजीशाही की समाप्ति का संघर्ष चल रहा था, वे एक नये समाज की कल्पना करते रहे जिसमें गरीब, शोषित मजदूर और पीड़ित वर्ग का उत्थान हो। उनका कहना था कि सामाजिक

न्याय, निर्धन और निराशवर्ग को उठाकर ही किया जा सकता है। अतः सब प्रकार से शोषण भूख और निर्धनता से मुक्ति के लिए समाजवादी समाज की रचना की स्थापना का प्रयास किया। जय प्रकाश नारायण ने मेहनतकश के यथार्थ जीवन में उतरकर सामाजिक विषमता का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर लिया था। यद्यपि अपने अमेरिकी प्रवासकाल में जय प्रकाश नारायण साम्यवादी दल के सदस्य थे और ला फालेट जैसे प्रगतिशील विचारकों से प्रभावित थे तथापि स्वदेश लौटने पर साम्यवादी लहर की उफान उन्हें कही और भटका नहीं सकी। जय प्रकाश नारायण की दृष्टि राष्ट्रीय आन्दोलन और राष्ट्र की समाजवादी मांग पर ही केन्द्रित रही और समाजवादी विचारों तथा गांधीवादी नीतियों के प्रति निष्ठा तथा त्याग के कारण वे लोकप्रिय हो गये।

अमेरिकी से साम्यवादी विचारधारा से अभिभूत होकर भारत आने पर भारतीय साम्वादियों से बड़ी उम्मीद किये थे, इस दृष्टि से जय प्रकाश नारायण को गांधी की नेतृत्व में क्रान्ति का अभाव दिखा।[1] अतः जय प्रकाश ने गांधी के कार्यक्रमों की प्रशंसा न कर उसे स्वतंत्रता के लक्ष्य की प्राप्ति में असफल प्रयोग के रूप में देखा। जय प्रकाश के मानसतल पर वैज्ञानिक समाजवाद की भावना आन्दोलित हो रही थी, जिसमें तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय परिदृष्य का भी व्यापक प्रभाव पड़ा। फलतः जय प्रकाश की दृष्टि में वैज्ञानिक समाजवाद ही आगे बढने का एक मात्र मार्ग दिखा।[2] जय प्रकाश को एक तरफ कांग्रेस के कार्यक्रमों में समाजवादी तत्व का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा था तो दूसरी ओर विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी, व्यापक बेरोजगारी तथा कारखानों की अनवरत तालाबन्दी भी चिन्ता का कारण था। नैराश्य एवं धनीभूत असंतोष में गर्भित जय प्रकाश नारायण का समाजवादी विचार कांग्रेस के अन्दर भी पूर्व से चल रहा था और बामपंथी विचारधारा का बीजरूप कांग्रेस के अन्तर्गत नेहरू और सुभाष के द्वारा अंकुरित किया जा चुका था।

कांग्रेस के अन्तर्गत ये वामपंथी, किसानों और मजदूरों के सीधी कार्यवाही के पोषक थे।[3] यद्यपि इस अवधि तक देश के कई भागों में समाजवादी संगठन आकार लेने लगा था।[4] 1933 में बनारस में कमलापति त्रिपाठी, त्रपद भट्टाचार्य और सम्पूर्णानन्द ने समाजवादी दल का संगठन बनाया था।[5] केरल और दिल्ली में भी इस तरह के दल का रूप दिखने लगा था।[6] जय प्रकाश के मानसतल पर स्वभावतः एक छाप रेखांकित हो चुकी थी कि ''आजाद देश की राष्ट्रीयता पूंजीवादी प्रसार भले ही बन जाय परन्तु गुलाम देश की राष्ट्रीयता एक क्रांतिकारी शक्ति होती है इस क्रांतिकारी शक्ति से दूर रहकर समाजवाद एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया जा सकता हमारी कांग्रेसी शक्ति इसी क्रांतिकारी शक्ति का संगठित रूप है अतः इस क्रांतिकारी संस्था से सम्पर्क रखकर ही समाजवाद जनता के निकट पहुंच सकता है।[7]

जय प्रकाश जेल में ही समाजवादी विचारकों के साथ नियमित क्लास भी लगाया करते थे अन्ततः विचार विमर्श के उपरान्त चार प्रमुख प्रश्न उभरकर सामने आये।[8] 1– गांधी के नेतृत्व के प्रति असंतोष। 2–सविनय अवज्ञा की असफलता। 3–वर्ग विश्लेषण की पद्धति लागू करने की इच्छा। 4–कृषक मजदूर से जुड़ जाने की आकांक्षा।

जय प्रकाश के राजनीतिक जीवन का अभिध्येय सामाजिक न्याय के आधार शिला पर समाज की संरचना रहा है वे सामाजिक न्याय के दोनों पक्षों स्वतंत्रता और समानता का अध्ययन किये और जेल से मुक्त होने पर जय प्रकाश ने अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर सक्रिय रूप से इस संगठन के लिए प्रयास किया यद्यपि नेहरू ने इस दल का स्वागत किया परन्तु सदस्यता से इनकार किया था।[9] किन्तु अनेक विचार विमर्श के पश्चात जय प्रकाश नारायण, नरेन्द्र देव आदि ने इसे कांग्रेस के शाखा के रूप में संगठित करने का निश्चय किया तथा इसे कांग्रेस समाजवादी दल के नाम से स्थापित किया। जय प्रकाश नारायण भारतीय साम्यवादियों से पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं थे तथापि समाजवादी कार्यक्रम चलाने हेतु साम्यवादियों से उन्हें गठबन्धन करना पड़ा। अपने समाजवादी संकल्प तथा कार्यक्रमों को स्थापित करने के लिए उन्होंने कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना 1934 में किया जो श्री नारायण का इस दिशा में विशिष्ट योगदान है। कांग्रेस समाजवादी पार्टी वर्जुवा वर्ग की पार्टी थी, उसके संस्थापकों में जय प्रकाश नारायण, नरेन्छ देव तथा अशोक मेहता प्रमुख थे।

यद्यपि इस अवधि तक देश के कई भगों में समाजवादी संगठन आकार लेने लगा था, परन्तु इसका देशव्यापी संगठन बनाने का प्रयास जय प्रकाश नारायण ने ही किया था। जय प्रकाश नारायण का उद्देश्य उत्पादक समूह को समस्त अधिकार का हस्ताक्षर करना तथा देश के आर्थिक सामाजिक जीवन का विकास कराना था। वे चाहते थे कि प्रमुख उद्योगों जैसे लौह, वस्त्र, जूट, रेल, खान, बैक, आदि का सामाजीकरण हो, तथा उत्पादन विनियम एवं वितरण हेतु सरकारी समितियों का संगठन और उनकों प्रोत्साहन मिले। विदेशी व्यापर पर राज्य का एकाधिकार हो, राजाओं और जमीन्दारों का अन्त, किसानों की भूमि का पुर्नविभाजन, वयस्क मताधिकार का व्यावसायिक आधार पर प्रयोग, राष्ट्रीय आय की आवश्यकता के अनुसार वितरण, राज्य द्वारा सहयोग मूलक और सहकारी खेती के लिए प्रोत्साहन आदि उनका उद्देश्य था। जय प्रकाश कांग्रेस सोसलिस्ट पार्टी के सर्वदा प्रमुख स्तंभ बने रहे।[10] जयप्रकाश ने कांग्रेस सोशलिस्ट ''सामाजिक पत्रिका भी प्रकाशन और संचालन किया। जय प्रकाश नारायण ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति शास्त्र के स्तर की लगभग 500 पुस्तकों की तालिका बनायी इन पुस्तकों में मुख्यतः मार्क्सवाद मजदूर संगठन क्रान्तिदर्शन, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र की महत्वपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन करने का आग्रह किया इस संदर्भ में सुभाष चन्द्र बोश को पत्र लिखे जिसमें उन्होंने सोशलिस्ट बुक क्लब की चर्चा की और सुभाषचन्द्र बोस में इसके संस्थापक और सलाहाकार समिति के सदस्य बनने की राय जानने का प्रयास किया। कांग्रेस समाजवादी पार्टी का प्रथम अधिवेशन पटना में आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में सत्रह मई 1934 को हुआ। इस अधिवेशन के प्रतिनिधियों ने कांग्रेस समाजवादी पार्टी के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस के कार्यक्रम

तथा संविधान का मसंविदा तैयार करने हेतु एक समिति गठित की गयी और जय प्रकाश नारायण इसके महासचिव बने।[11]

जय प्रकाश नारायण पूरे उत्साह के साथ एक प्रान्त से दूसरे प्राप्त का दौरा करते हुए कांग्रेस समाजवादी दल के संगठन के लिए स्तुत्य प्रयास किया।[12] उन्होंने समाज को यह समझाने का प्रयास किया कि मात्र स्वराज से जनता का समस्याओं से अन्त नहीं होगा, जब कि आर्थिक संगठनों में मूल भूत परिवर्तन नहीं लाया जाता।[13] जय प्रकाश नारायण का कहना था कि राजनीतिक और आर्थिक संगठन समाजिक न्याय और आर्थिक स्वतंत्रता के सिद्धान्तों पर करना चाहिए इस संगठन के फलस्वरूप जहां समाज के प्रत्येक व्यक्ति की राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति होगी वहीं इसका उद्देश्य केवल भौतिक आवश्यकताओं की तृप्ति ही न होगी बल्कि यह अपेक्षा रखी जायेगी कि इसके कारण राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ्य जीवन बिता सके और अपना नैतिक तथा बौद्धिक विकास कर सकें। बड़े पैमाने पर सामूहिक रूप से चलने वाले सभी उद्योग धन्धों को इस तरह चलाना होगा कि उनका अधिकार और आधिपत्य व्यक्तियों के हाथ से निकलकर समाज के हाथों में आ जाये।

निष्कर्ष

जयप्रकाश नारायण ने गांवों के जीवन को पुनः संगठित तथा स्वतंत्र शासित इकाई बनाने एवं अधिक से अधिक स्वावलम्बी बनाने का भी प्रयत्न किया, उनका कहना था कि हर काश्तकार के पास उतनी ही जमीन होनी चाहिए जिससे वह अपने परिवार का उचित रीति से भरण पोषण कर सकें। जय प्रकाश नारायण भारतीय समाजवादी आन्दोलन के लिए नीव की ईट थे, वे भारत में सामाजिक संरचना की दृष्टि से क्रांन्तिकारी कार्यक्रमों से विमुख नहीं होना चाहते थे।

जय प्रकाश नारायण अभिप्राय सत्ता का अधिग्रहण नहीं बल्कि जन आन्दोलन द्वारा समाजवादी भारत का निर्माण करना तथा मानवीय मूल्यों का प्रतिस्थापना करना था। इन्हीं लक्ष्यों से अभिभूत श्री नारायन ने साखोदेवरा गांव में सर्वोदय आश्रम की स्थापना भी किया था जिसमें स्वतंत्रता समानता और बन्धुत्व को बढ़ावा मिला। इसके बाद भूमिदान, ग्रामदान, सम्पत्तिदान और फिर जीवनदान के माध्यम से आर्थिक सामाजिक रूप से राष्ट्र को सुदृढ करने का प्रयास किया। असंतोष एवं विद्रोह की कुहेलिका में भटकती युवा पीढ़ी राजनीतिक आर्थिक एवं नैतिक अवमूल्यन की स्थिति में राष्ट्र के लिए मूलचूल क्रांतिकारी परिवर्तन हेतु समग्र क्रांति का आह्वान भी किया। जिसमें समाज में अन्याय शोषण आदि का अन्त तथा नैतिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक क्रांति का लक्ष्य रखा, उनका कहना था कि समाज के आर्थिक ढांचे को सुदृढ़ तथा आर्थिक विकास का लक्ष्य व्यक्ति ही होना चाहिए। जय प्रकाश नारायण का समाजवाद किसी विदेशी दर्शन से आयातित नहीं बल्कि भारतीय संदर्भ की उपज थी, उन्होंने अपने सुनिश्चित लक्ष्य के लिए अपने मानसलोक को पूर्णतः मुक्त रखा और जहां से भी अनुकूल विचार तत्व अथवा नया प्रकाश दिखा तो जय प्रकाश नारायण ने उसे स्वीकार किया तदनुसार अपनी वैचारिक यात्रा में भी परिवर्तन किया, अतः हम कह सकते है कि वे सत्य का ऐसा आग्रही थे जो रूढ़ि का अनुगामी नहीं होता।

यह सत्य हे कि देश की जनता में विशेष कर लगातार पतनोन्मुख राजनीतिक संदर्भ में उनके लिए विशेष सम्मान था, आपातकाल के बाद वह एक मसीहा की तरह उभर कर सामने आये थे। इतना निर्विवाद है कि बीसवीं शताब्दी के नेताओं में महात्मागांधी के बाद जय प्रकाश को ही एक साथ प्रशंसा एवं आलोचना मिलती रही है, महात्मा गांधी की तरह जय प्रकाश नारायण ने भी कोई पद नहीं सम्भाला, इसीलिए नैतिकता और त्याग के महातुला पर गांधी जैसा वे अतुलनीय रहे।

अंत टिप्पणी

1. *सी0एन0 चितरंजन : एसेसिंग जे0पी0 – रेवोल्यूशनरी ऑफ एसकेपिस्ट ''मेनस्ट्रीम'' अक्टूबर 20, 1979, पृ0–71*
2. *जय प्रकाश नारायण : ह्वाई सोशलिज्म : बनारस आल इण्डिया कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, 1936।*
3. *दि इण्डियन एनुअल रजिस्टर भाग 11, पृ0–36*
4. *सम्पूर्णानन्द : मेमोरिज एण्ड रिफलेक्शन : एसिया पब्लिसिंग हाउस, 1962*
5. *पूर्वोक्त, पृ0–72–73*
6. *आचार्य नरेन्द्र देव : सोशलिज्म एण्ड दी नेशनल रेवोल्यूशन, बाम्बे पदमा पब्लिकेशन 1946, पृ0–25*
7. *रामवृक्ष बेनीपुरी : जय प्रकाश नारायण, पृ0–91*
8. *प्रकाश शास्त्री : भारत में समाजवादी आन्दोलन पृ0–32*
9. *गिरिजा शंकर : सोशलिस्ट एक्सपेरीमेन्ट इन इण्डिया एण्ड जय प्रकाश नारायण1929–48 दी क्वार्टरली रिव्यू आफ हिस्टोरिकल स्टडीज भाग–17, नं0–2, 1977–78, पृ0–83*
10. *सम्पूर्णानन्द : मेमोरिज एण्ड रिफलेक्शन, पृ0–72*
11. *इण्डियन एनुअल रजिस्टर भाग–1, 1934, पृ0–340*
12. *यूसुफ मेहर अली : जय प्रकाश नारायण, पृ0–10*
13. *होम डिपार्टमेन्ट पोलिटिकल रिपोर्ट एफ नं0–36/3/35 पृ0–5*